REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | MARCH - 2025

माधव कौशिक की ग़ज़लों मे सत्ता प्रतिष्ठानों का दोमुहापन का अध्ययन

दीपक शर्मा
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. क्रांति मिश्रा
प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

सारांश –

इस अध्ययन में, माधव कौशिक की गजलों में सत्ता के दोहरे चेहरे और प्रतिष्ठानों की आलोचना पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उनकी गजलों में सत्ता के दोहरे मानक, समाज में असमानता, और राजनीतिक भ्रष्टाचार के विषय को उजागर किया गया है। वे सत्ता के उन पहलुओं को बेनकाब करते हैं, जो जनता की भलाई के बजाय केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं। उनके लेखन में सामाजिक प्रतिबद्धता और सत्ता के प्रति आलोचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। माधव कौशिक की गजलों में सत्ता प्रतिष्ठान को एक ऐसे ताकतवर संस्थान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो आम आदमी की तकलीफों से बेखबर रहते हुए अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है। इस प्रकार, उनकी गजलें एक सशक्त आलोचना हैं, जो सत्ता के दोहरे रवैये और समाज में व्याप्त असमानताओं को उजागर करती हैं।

मुख्य शब्द – सत्ता, प्रतिष्ठान, दोमुहापन, आलोचना एवं सामाजिक प्रतिबद्धता।

प्रस्तावना –

माधव कौशिक हिंदी साहित्य के उन कवियों में से एक हैं, जिनकी गजलें न केवल काव्यात्मक दृ ष्टिकोण से उत्कृष्ट हैं, बल्कि समाज और राजनीति के गहरे पहलुओं को भी उद्घाटित करती हैं। उनका लेखन न केवल व्यक्तिगत भावनाओं और जीवन के छोटे–छोटे पहलुओं का चित्रण करता है, बल्कि सत्ता और समाज के बीच की असमानताओं, संघर्षों और दोहरे मानकों की भी सशक्त आलोचना करता है। माधव कौशिक की गजलें एक ऐसे समय की गवाही देती हैं, जब समाज के ताने–बाने में सत्ता का प्रभाव गहरा हो चुका था, और सत्ता प्रतिष्ठान अपनी नीतियों और निर्णयों से आम जनता को प्रभावित कर रहे थे। इस प्रकार, उनके लेखन में सत्ता की निरंकुशता और उसकी दोहरी प्रकृति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सत्ता प्रतिष्ठान का दोमुहापन, एक सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकता है, जिसे माधव कौशिक अपनी गजलों में बखूबी उजागर करते हैं। सत्ता, जो समाज के लिए न्याय, समानता और कल्याण का प्रतीक मानी जाती है, अक्सर अपनी नीतियों के माध्यम से अपनी शक्ति को संरक्षित करने और जनता को नियंत्रित करने के प्रयास करती है। यह दोमुहापन सत्ता के कार्यों, उसके दृष्टिकोण और उसकी नीतियों में स्पष्ट रूप से दिखता है, जहाँ एक ओर उसे जनहित में काम करने की जिम्मेदारी दी जाती है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी

स्वार्थसिद्धि के लिए उन नीतियों का पालन करती है, जो केवल उस अपने शक्ति के दायरे में बनाए रखने का माध्यम बनती हैं।

माधव कौशिक की गजलों में इस सत्ता की आलोचना और उस पर प्रश्न उठाना एक प्रमुख तत्व है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से सत्ता की शक्ति और उसके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार, पक्षपाती नीतियों और असमानताओं को उजागर करते हैं। उनकी गजलों में यह स्पष्ट होता है कि वे सत्ता के उस पहलू को आलोचनात्मक दृष्टि से देखते हैं, जो जनता के लिए कष्टकारी और असमानताओं से भरा होता है। इसके माध्यम से वे यह संदेश देते हैं कि सत्ता का वास्तविक उद्देश्य जनकल्याण होना चाहिए, न कि केवल अपनी शक्ति का प्रदर्शन और लाभ उठाना।

इसके अलावा, माधव कौशिक की गजलें सामाजिक न्याय और समानता की आवश्यकता पर भी जोर देती हैं। उनकी कविताओं में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वे सत्ता के विरोध में एक सशक्त आवाज के रूप में खड़े होते हैं, जो समाज को वास्तविक समस्याओं और मुद्दों को सामने लाती है। उनकी गजलों में सामाजिक असमानता, गरीबी, भ्रष्टाचार, और अन्याय के खिलाफ एक तीव्र विरोध दिखता है। वे अपने लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं और विभाजन को चुनौती देते हैं।

माधव कौशिक का लेखन केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। उनकी गज़लों में समाज की समस्याओं के प्रति एक गहरी जागरूकता और आलोचनात्मक दृष्टि देखी जाती है। वे सत्ता के दोहरे रवैये को उजागर करते हुए यह बताते हैं कि कैसे सत्ता प्रतिष्ठान अपनी नीतियों और निर्णयों के माध्यम से जनहित की बजाय अपने स्वार्थों की पूर्ति करते हैं। उनके लेखन में यह भावनाएँ स्पष्ट रूप से उभरती हैं कि कवि का कार्य केवल कला के रूप में शब्दों को प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि समाज के भीतर व्याप्त असमानताओं और अन्याय के खिलाफ एक आवाज उठाना है। इसके साथ ही, माधव कौशिक की गजलें राजनीतिक और सामाजिक दायित्व की भी बात करती हैं। उनका यह मानना था कि साहित्यकार का दायित्व सिर्फ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करना नहीं, बल्कि समाज और राजनीति के कुप्रभावों पर ध्यान आकर्षित करना है। उनके लिए साहित्य एक संवेदनशील माध्यम था, जिसके द्वारा वे समाज में व्याप्त भेदभाव, अन्याय, और असमानता के खिलाफ अपनी आवाज उठा सकते थे।

माधव कौशिक की गजलें एक समृद्ध साहित्यिक धरोहर के रूप में उभरती हैं, जो सत्ता और समाज के संबंधों को चुनौती देती हैं। उनके लेखन में राजनीतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व की गहरी समझ दिखाई देती है, जो आज भी हमारे समय में प्रासंगिक है। उनका साहित्य न केवल साहित्यिक कृतियों के रूप में मूल्यवान है, बल्कि यह समाज और राजनीति की गहरी समझ को भी उजागर करता है, जो पाठकों को सत्ता के दोहरे रवैये और असमानताओं के खिलाफ सोचने के लिए प्रेरित करता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य माधव कौशिक की गजलों के माध्यम से सत्ता प्रतिष्ठानों के दोहरे चेहरों को समझना और उनका विश्लेषण करना है। उनके लेखन में सत्ता और समाज के बीच के रिश्ते को लेकर जो दृष्टिकोण मिलता है, वह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि समाज में असमानताओं और भ्रष्टाचार को किस तरह से चुनौती दी जा सकती है। इस अध्ययन के माध्यम से, हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे माधव कौशिक ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज और सत्ता के बीच की असंतुलन को उजागर किया और सत्ता प्रतिष्ठानों के दोहरे रवैये की आलोचना की।

विश्लेषण –

माधव कौशिक की गजलों में सत्ता और उसके संस्थानों का जो चित्रण मिलता है, वह अक्सर उनके दोहरे रवैये को उजागर करता है। सत्ता प्रतिष्ठान के अंदर जा दिखावा और असलियत का फर्क होता है, उसे उनकी गजलों में बखूबी दर्शाया गया है। वे उन मुद्दों को उठाते हैं, जो समाज में दबे हुए हैं या जिनका सामना आम जनता को करना पड़ता है। उनकी गजलों में आम जनता और सत्ता प्रतिष्ठान के बीच एक गहरी खाई दिखाई देती ह। यह खाई सत्ता की नीतियों, उसके निर्णयों और उनके प्रभावों से उत्पन्न होती है। उनके लेखन में इस असमानता और अन्याय के प्रति तीव्र आलोचना मिलती है।

माधव कौशिक अपनी गजलों के माध्यम से सत्ता के निरंकुशता और उसके पक्षपाती रवैये पर सवाल उठाते हैं। वे सत्ता प्रतिष्ठान के दोहरे मानकों की आलोचना करते हैं, जहाँ एक ओर उनकी नीतियाँ जनकल्याण के नाम पर लागू होती हैं, वहीं दूसरी ओर सत्ता के संरक्षण के लिए जनता को कुचला जाता है।

माधव कौशिक की गजलों में यह महसूस होता है कि कवि का एक सामाजिक और राजनीतिक दायित्व होता है। वे सत्ता के आंतरिक भ्रष्टाचार और असमानताओं के खिलाफ अपनी आवाज उठाते हैं। उनके लिए साहित्य केवल कला नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त असमानता और अन्याय के खिलाफ एक हथियार है। माधव कौशिक की गजलों में सामाजिक प्रतिबद्धता दिखाई देती है। उनक लेखन में यह स्पष्ट होता है कि वे केवल व्यक्तिगत भावनाओं का ही नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक समस्याओं का भी चित्रण करते हैं। सत्ता के दोहरे चेहरे को बेनकाब करना उनका मुख्य उद्देश्य होता है।

सत्ता प्रतिष्ठानों का दोमुंहापन एक गहरा सामाजिक–राजनीतिक विषय है, जो सत्ता की नैतिकता, उसकी कथनी–करनी में अंतर और जनहित के प्रति उसकी वास्तविक नीयत को उजागर करता है। सत्ता प्रतिष्ठानों (सरकार, नौकरशाही, न्यायपालिका, मीडिया आदि) का दोमुंहापन अक्सर उनके निर्णयों, वायदों और कार्यों के बीच विरोधाभास के रूप में सामने आता है। सत्ता में बैठे लोग अक्सर आदर्शवाद, नैतिकता और जनकल्याण की बातें करते हैं, लेकिन उनके कार्य उनके वचनों से मेल नहीं खाते। उदाहरण के लिए – चुनावी घोषणापत्र में वादों की भरमार होती है, लेकिन चुनाव जीतने के बाद जनता के मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। कानून और नीति निर्धारण में समानता और न्याय की बात की जाती है, लेकिन उनका लाभ केवल विशेष वर्गों तक सीमित रह जाता है।

सत्ता प्रतिष्ठान खुद को जनता का सेवक बताते हैं, लेकिन नीतियाँ और फैसले अक्सर पूंजीपतियों, उद्योगपतियों या सत्ता के करीबी लोगों के हित में होते हैं। सरकारी योजनाओं का प्रचार बड़े स्तर पर किया जाता है, लेकिन उनका लाभ हाशिए पर खड़े लोगों तक नहीं पहुंच पाता।

सरकारें और संस्थाएं पारदर्शिता और जवाबदेही की बात करती हैं, लेकिन जब उन पर सवाल उठाए जाते हैं, तो वे गोपनीयता का हवाला देकर जानकारी देने से बचती हैं। सूचना का अधिकार जैसी व्यवस्थाओं को कमजोर करने की कोशिशें इसी दोहरे रवैये का प्रमाण हैं।

आम जनता के लिए कड़े कानून लागू होते हैं, लेकिन बड़े नेताओं, अधिकारियों और प्रभावशाली लोगों के लिए वही कानून लचीला बन जाता है। घोटालों और अपराधों में लिप्त लोगों को सत्ता का संरक्षण मिल जाता है, जबकि आम नागरिकों को न्याय पाने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ता है।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, लेकिन जब सत्ता से उसकी नजदीकी बढ़ जाती है, तो वह निष्पक्षता खो देता है। सत्ता प्रतिष्ठान अपने हित में खबरें गढ़ते हैं और जनमत को प्रभावित करने के लिए मीडिया का उपयोग करते हैं।

समकालीन संवेदनात्मक परिपेक्ष्य में सत्ता प्रतिष्ठानों का दो मुहापन एक महत्वपूर्ण विषय है। इस विषय को लेकर हमारे देश के जागरुक ग़ज़लकारों ने अपने शेरों को प्रति ध्वनित किया है। राजनीति, सबसे अहम विषय है। राजनीतिकों के दो मुहापन के कारण देशवासियों को वेवशी और पीड़ा का अनुभव करना पड़ रहा है। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत समाज को अनेक भागों में विभाजित कर दिया गया है। आर्थिक दृष्टि से जिनको लाभ मिलना चाहिए वे वंचित हैं। दो मुहा यानि वचनों की बदलावीकरण के कारण अव्यवस्थाएँ बढ़ी है। तत्कालीन भारतीय समाज में बढ़ती अराजकता और मूल्यहीनता के कारण राष्ट्र का ढाँचा बिगड़ रहा है। दो मुही बातें लोक को असमंजस मे ंडाल देती है। ग़ज़लकारों ने आम आदमी की बढ़ती पीड़ा को अपने भीतर पल–पल महसूस करने लगे हैं।

दो मुहापन के कारण बैचैनी बढ़ी है। यही कारण है कि माधव कौशिक ने अपनी ग़ज़लों मे ंगरीबों की छटपटाहट को व्यक्त किया है। उनकी दृष्टि से यह गुस्सा और नाराजगी उस अन्याय और राजनीति के कुकमा के खिलाफ नये तेवरों की आवाज थी। इन दो मुहें संग्रह के कारण दलित, श्रमिक, गिरजनवासी, आदिवासी, निरीह जनता अन्याय की चक्की में पीसा जा रहा है। समाज और राजनीति भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है। इसी भ्रष्टाचार के चंगुल में फँसे हमारे लोकतंत्र में जनता के कल्याण के लिए जो धनराशि आवंटित की जाती है, उसका दुरूपयोग मंत्रीगण, सरकार के ठेकेदारों और नौकरशाहों द्वारा की जाती है। सड़क, अस्पताल, बाँध, नमामि गंगे, नहरें, कुल गरीबों के भवन आवास, शौचालय, स्कूल, आदि पर होने वाले खर्च व्यवस्था में बैठी

भ्रष्टता दीमक की तरह चाट जाती है। जनता मुह ताकती रह जाती है। हमारे देश में भुखमरी का सिलसिला आज़ादी से आज तक चला ही आ रहा है। पिछले दस सालों में एक लाख से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं लेकिन सरकार किसी समाधान की बात करने की बजाय इस समस्या पर परदा डालने में लगी रहती है।

इस प्रकार राजनेताओं की दोमुही पक्षधरता के कारण जीवन मूल्यों में गिरावट आ रही है। चुनाव निष्पक्ष नहीं हो रहे है। न्याय व्यवस्था दीर्घकालिक है, शिक्षा व्यवस्था बंदरवाट मे बँट गयी है। आरक्षण कानून में दोमुही बातें की जा रही हैं। सड़क पर चलना, घर मे रोशनी, ईधन, रोजमर्रा की वस्तुएँ, यात्रा उपचार सब मंहगे हो गए हैं। ईमानदारी मर चुकी है, नेतागण दोमुही बात करते हैं, जो जनता की हिफाजत न कर सके, पेट न भर सके, उस लोकतंत्र की महत्ता का गायन कब तक किया जाएगा। देश की सुरक्षा और विकराल समस्याओं के बारे में गम्भीरता से सोचने का समय किसी के पास नही है। मानवता मर चुकी है। स्त्री सुरक्षा का अग्रण्य रूहन विलाप ध्वनित हो रहा है। बेरोजगारी चरम सीमा पर है। सबका साथ–सबका विकास नारे सब दिखावटी हो गए हैं। समग्रता से देखा जाए तो ये सब वैश्य सत्ता प्रतिष्ठानों के दोमुहापन आदेशों का प्रतिफल है।

माधव कौशिक ने आम जनता की व्यवस्थाओं को अपनी ग़ज़लों मे तीव्र धार दिया है। 'कवि अंगारों पर नंगे पाँव' ग़ज़ल संग्रह के अन्तर्गत सत्ता के चाल चरित्र इस प्रकार व्यक्त किया हैः–

क्या बताऊं दरम्यां अब फसला कोई नहीं
सामने मंजिल है लेकिन रास्ता कोई नहीं।[1]
इसी क्रम में कवि का यह ग़ज़ल परिवेश जन्य लगता हैः–
पहले मुझको सच को सच लिखने का मौका दीजिए
काट कर फिर खुद ही अपनी उंगलियाँ रख जाऊँगा।
आने वाली पीढ़ियों को कुछ तो आसानी रहे
रास्ते भर खून के ताजा निशा रख जाऊँगा।[2]

इसी प्रसंग मे माधव कौशिक ने सत्ता के दोमुहापन को इस प्रकार व्यक्त किया हैः–

गाँवों की बात टाल गए शहर के वज़ीर
गुरबत को दरकिनार नहीं कर सका कोई।[3]

आज देश मे इंसानियत मर चुकी है। कालाधन का व्यापार जोरों पर चल रहा है। नए हुक्कमरान का आदश जन–जीवन इत्तमीनान से पृथक कर दिया हैः–

कदम–कदम पे कड़ा इम्तेहान पहले सा
हमें मिला है नया हुक्मरान पहने सा।
जमीं की कोख में अपने लिए जगह की नहीं
कहाँ तलाश करें इत्मीनान पहले सा।
पहाड़ टूटकर मिट्टी में मिल गया लेकिन
खड़ा है आज भी सर पर लगान पहले सा।[4]
माधव कौशिक का एक चुभता शेर दुष्टव्य हैः–
जाने किस उम्मीद पर बैठे रहे हम उम्र भर
सिवा कुछ एक हादसों के क्या कुछ भी नहीं।[5]
इसी परिपेक्ष्य में कवि की भविष्यवाणी सच लगती हैः–
रोशनी सारी इकठ्ठी करके ले जाएँगे लोग
मेरे हाथों में चिरागों का धुआँ रह जाएगा।[6]

आज देश में दोहरी व्यवस्था लागू है। इसका दुष्परिणाम जनता जनार्दन भोगती हैः–

बरसों भूख–प्यास के सदमे सह–सहकर धीरे–धीरे
अपने दिल के अरमानों पर रख लेते हैं पत्थर लोग।[7]

सत्ता प्रतिष्ठान का दोमुहापन का ही दुष्परिणाम है कि लोगों को तनावों मे जीना पड़ रहा हैः–

मन के हाथों में हथकड़ियां और बेड़ियां पांवों में
मजबूरी ऐसी थी बरसों जीना पड़ा तनावों में।[8]

'नयी उम्मीद की दुनियाँ' ग़ज़ल संग्रह में माधव कौशिक ने संवेदनहीनता का यथार्थ चित्रण किया हैः–

दुनिया वालों की मुसीबत देखो
रेत होकर भी नदी है दुनिया।[9]
संवेदना की विषमता को बताते हुए लिखा हैः–
बहुत दिन हो गये गाँवों से निकले
अभी तक याद है हँसना किसी का।
मैं सर रख कर जहाँ कुछ देर रो लूँ
नहीं मिलता मुझे कन्धा किसी का।[10]

'नयो सदी का सन्नाटा' के परिवेश मे समकालीन संवेदना इस प्रकार प्रकट हुई हैः–

क्या कुछ होता नहीं आज की दुनिया में
आड़े तिरछे रंग बदलती दुनिया में।
सारी चीजे आसमान को छूती हैं
सस्ता है तो सिर्फ आदमी दुनिया में।
तुम क्या जानो इस दुनिया की सच्चाई
सच फिरता निर्वासित झूठी दुनिया में
क्या जाने किस रोज़ सुनाई दे जाये
चीख रहा हूँ मैं भी बहरी दुनिया में।[11]

इस अंधेर नगरी दुनिया में कोई किसी की सुधि नहीं लेताः–

कोई भी सुध नहीं लेता किसी की
हजारों लोग लटके हैं अधर में।[12]

'शब्द ढले अंगारों में' गज़ल संग्रह में माधव कौशिक ने यह स्पष्ट किया है कि देश में विसंगति का दौर है। इसी आशय से संबंधित शेर प्रस्तुत हैः–

सच को झूठ बनाने में
दूर की कौड़ी लाती है।
हर सूरज की किस्मत में
दिया है ना बाती है।
जख्म लगाकर खुद दुनिया

चुपक से सहलाती है।[13]

सर्वहारा, दमित वर्ग जिनकी जुबान पर व्यवस्था ताले जड़ देती है, जिन्हें आवाज उठाने की कीमत प्राण देकर चुकानी पड़ती है, ऐसे बेजुवान शोषित जन के पक्ष में बोलने का दुस्साहस साहित्यकार ही कर सकता है। रचनाकार ही बेखौफ होकर सत्ता को ललकाते हुए वंचितों की प्रत्येक कहानी अपने लहू से दर्ज करने का बूता रखता है।

जीवन का गणित भी कितना उलटा है? मनुष्य आजीबन सुख खोजता है और सुख के ऐवज मे कितने दुःख बटोर लाता है। शांति पाना चाहता है। लेकिन सारी कोशिशें उसे तनाव और अशांति की दहलीज तक छोड़ आती हैं। जहाँ भूख है वहाँ रोटी नहीं, जहाँ बिस्तर हैं वहाँ नींद नहीं और जहाँ सुविधाएँ हैं वहाँ सुख नहीं।

जोखिम भरा समय हैं' में माधव कौशिक ने न तो कोई समाधान सुझाया है, न सांत्वना दी है और न ही झूठी आशावादिता का सपना दिखाकर वास्तविकता की भयावहता पर पर्दा डालने की कोशिश की है। स्थितियाँ सच में इतनी विस्फोटक हैं कि झूठ का कोई भी मुल्लमा सड़ी–गली व्यवस्था की सड़ांध को बाहर आने से रोक नहीं सकता।[14]

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सत्ता प्रतिष्ठानों का दोमुंहापन लोकतंत्र, समाज और आम जनता के विश्वास को कमजोर करता है। सत्ता की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए पारदर्शिता, स्वतंत्र मीडिया, सशक्त न्याय व्यवस्था और नागरिक जागरूकता आवश्यक है। जब तक जनता सतर्क नहीं होगी, तब तक सत्ता का यह दोहरा चरित्र जारी रहेगा।

संदर्भ –

1 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 1
2 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 4
3 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 84
4 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 79
5 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 177
6 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 57
7 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 49
8 माधव कौशिक – अंगारों पर नंगे पाँव, पृष्ठ 43
9 माधव कौशिक – नयी उम्मीद की दुनिया, पृष्ठ 47
10 माधव कौशिक – नयी उम्मीद की दुनिया, पृष्ठ 46
11 माधव कौशिक – नई सदी का सन्नाटा, पृष्ठ 35
12 माधव कौशिक – नई सदी का सन्नाटा, पृष्ठ 64
13 माधव कौशिक – शब्द ढले अंगारों में, पृष्ठ 49
14 प्रो. मंजुला राणा – माधव कौशिक की काव्य संवेदना, पृष्ठ 139